इसामी

Dr. Fozia Bano
Associate Professor
Department of History
Shia P.G. College,Lucknow

इसामी का पूरा नाम ख्वाजा अब्दुल मलिक इसामी था

उसके पूर्वजों में से एक अब्बासी खलीफाओं के अंतर्गत वज़ीर था और यही फख्र मलिक इसामी बगदाद से भारतवर्ष सुल्तान इल्तुतमिश के दरबार में आया था

- इसामी का जन्म १३११-१२ ईसवी में हुआ था
- जब मोहम्मद तुगलक ने अपन राजधानी परिवर्तिति की थी तब इसामी
- अपने दादा इज्जुद्दीन के साथ दौलताबाद गया था
- इसामी १३५०-५१ तक दौलताबाद में ही रहा और इसी समय उसने अपनी रचना पूरी की थी

- इसामी फिरदौसी के शाहनामे से बहुत प्रभावित था और उसने उसी की भांति फुतूह-अस सलातीन को कविता के रूप में लिखा है

- फुतुह -अस -सलातीन का इतिहास महम्मूद ग़ज़नवी से शुरू होता है और मोहम्मद तुग़लक पर उसका अंत होता है

- मेंहदी हुसैन इसामी को हिंदुस्तान का फिरदौसी और फुतुह अस सलातीन को शाहनामा-ए-हिन्द की संज्ञा देते हैं

- इस पुस्तक में अत्यंत विस्तृत कॉल का इतिहास लिखा गया है उसनेअनेक घटनाओं का उल्लेख किया है जिसमे अपने दादके अनुभवों का और उनकी स्मरण शक्ति का भर पूर लाभ उठाया है उसके द्वारा लिखा गया इतिहास का महत्त्व इसलिए और अधिक है क्योंकि उसके द्वारा लिखी
- गई घटनाएँकिसी और ग्रन्थ में नहीं मिलती हैं

अल्लाउद्दीन के कॉल का इतिहास -----

विश्वसनीय उस के पास इस कॉल के इतिहास पुराने अनुभवी लोगों की चश्मदीद गवाही थी

वह मंगोल आक्रमणों के विषय के अनेक तथ्यों को लिखता है

सुल्तान अल्लाउद्दीन खलजी के १२९६ के दखिन अभियान उसके रणथंभ और की घेरे बंदी आदि को लिखा है

सुल्तान मोहम्मद तुगलक के कॉल में वह राजधानी परिवर्तन से हताश हुआ था
अतः वह उक्त सुल्तान की कटु आलोचना करता है

इसामी उन अनेक कहानियों का उल्लेख करता है जो सुल्तान के खिलाफ थीं
वह अल्लाउद्दीन की प्रशंसा करता है जबकि मोहम्मद तुगलक की कटु आलोचना करता है

इसामी के ग्रन्थ का महत्त्व इसलिए और हो जाता है क्योंकि बाद के मुस्लिम इतिहासकारों ने इसके सन्दर्भ दिए हैं तथा इसको अपना आधार बनाया है

निजाम्मुद्दीन अहमद फरिश्ता और बदायूंनीसभी ने इसामी की फुतुह अस सलातीन का उपयोग किया है

इसामी का मूल्याङ्कन

इसामी की शैली की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्पष्टवादिता है तथा सहजता और साधारणता है

वह अतिश्योक्तिपूर्ण उल्लेख करता है उसका उल्लेख सदैव निष्पछ नहीं है किन्तु उसके लिखने में क्रमबद्धता है
अतः उसका ग्रन्थ मध्यकालीन भारतीय इतिहास की अध्यन की लिए बहुत महत्वपूर्ण है